वृक्षारोपण को देवाराधना जितना महत्व दें

-श्रीराम शर्मा आचार्य

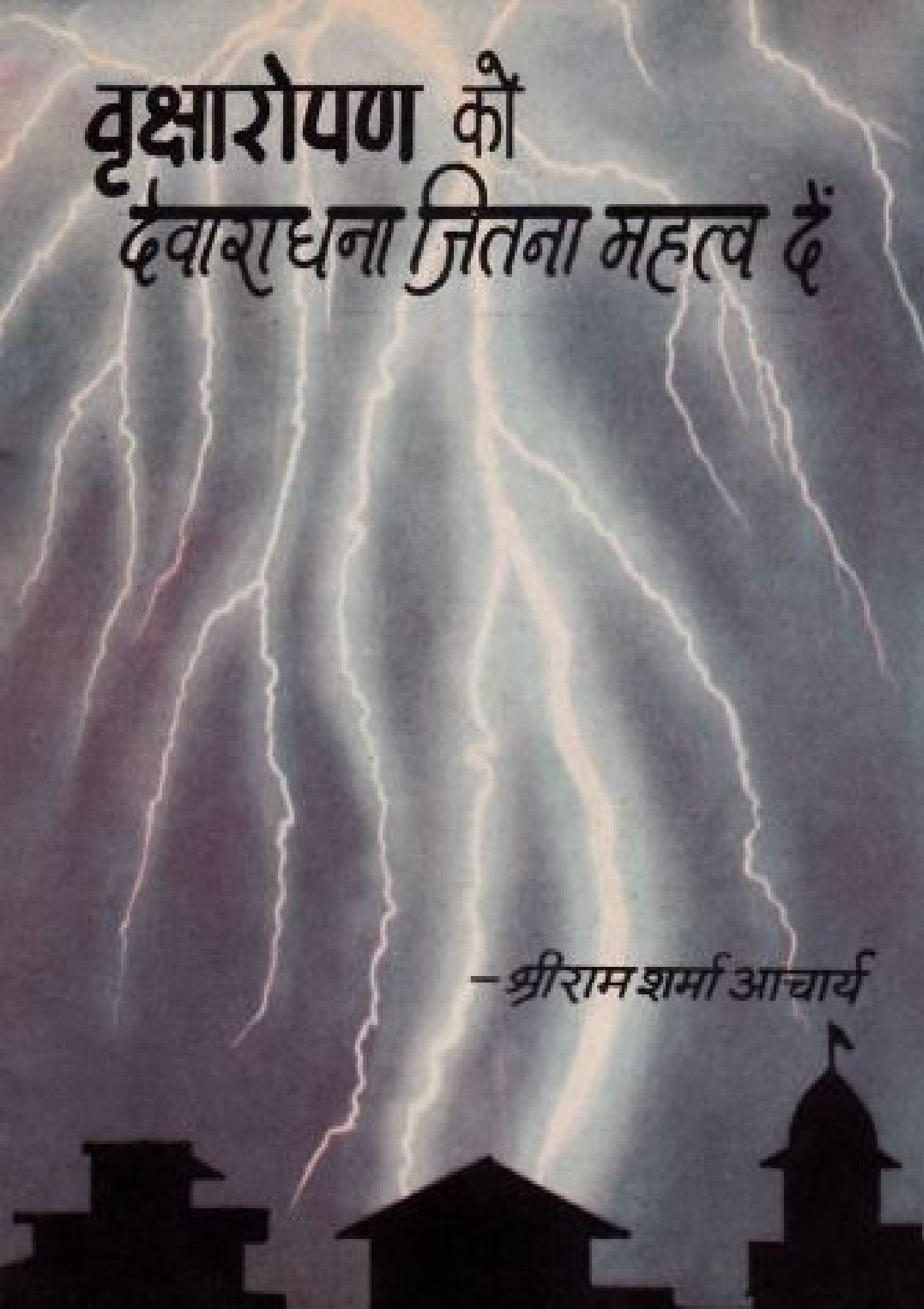

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA

HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्र० ८-२६

प्रकाशक:

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक:

श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक:

युग निर्माण प्रेस
गायत्री तपोभूमि मथुरा

१९८२

मूल्य:

तीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्षारोपण को देवाराधना जितना महत्व दें

वन सम्पदा का जीव-जगत से घनिष्ठ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। दोनों के अस्तित्व का आधार इसी अटूट सम्बन्ध, सहकार-सहयोग को माना जाता है। प्रकृति के विभिन्न घटकों के परस्पर सम्बन्धों का जब चेतना के धरातल पर परिस्थिति की के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है, तो इसे इकॉलाजी विज्ञान कहते हैं। इन सिद्धान्तों के अनुसार वनस्पति जगत प्राणी समुदाय को न केवल पोषण एवं प्राणवायु देता है अपितु इन दोनों का परस्पर सन्तुलन सारी सृष्टि के स्वास्तित्व के लिए अनिवार्य माना जाता है। जर्मनी के दो प्रमुख वैज्ञानिकगण आगस्ट थाइनेमन एवं कार्ल फ्रैडरिक के अनुसार प्रकृति जगत के अन्दर दृष्टिगोचर हो रही इस सन्तुलित व्यवस्था का नाम ही इकॉलाजी है। इन वैज्ञानिकों के अनुसार हवा, बादल, तड़ित विद्युत, जल, पृथ्वी, मिट्टी व भूमण्डल में स्थिति

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राणी, वनस्पति, सड़ने वाले पदार्थों आदि का परम्परावलम्बन "नोषजन चक्र" नामक जैविक हलचल में भली भाँति देखा जा सकता है। वर्षा का सन्तुलन, भूमि के कटाव को रोकना, जलाऊ ईंधन, कृमिकीटक खाकर फसल की रक्षा करने वाले पक्षियों को आश्रय, फल-फूल प्रदान करना तथा गिरने वाली पत्तियों से खाद बनाकर भूमि की उर्वरता में वृद्धि—ये कुछ ऐसे अनुदान वृक्ष-वनस्पतियों के जीवजगत को हैं कि इन्हें जीवन निर्वाह का प्राण कहा जाना ही उचित होगा।

एक समय था, जब पृथ्वी का दो-तिहाई भाग वनों से आच्छादित था। सारा प्राणी जगत प्राकृतिक सुषमा के बीच आनन्दमय जीवन बिताता था। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती चली गई, वन कटते चले गये। जनवृद्धि के अनुपात में बढ़ती आवश्यकतायें, अन्नोत्पादन के लिए जरूरी अधिक भूक्षेत्र एवं उद्योगों के अपरिमित विस्तार के कारण वनों का स्थान ले लिया—शहरों ने, खेतों ने एवं कल-कारखानों ने। आँकड़े बताते हैं कि ५० वर्ष पूर्व विश्व में बारह अरब अस्सी करोड़ हैक्टेयर भूमि पर जङ्गल छाये थे। आज केवल १६ प्रतिशत भूभाग (२ अरब हैक्टेयर)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर ही वन हैं। पारिस्थितिकीके विशेषज्ञ बताते हैं कि इसका कारण है अदूरदर्शितापूर्ण ढङ्ग से अन्धाधुन्ध जङ्गलों का कटना। उसके अनुसार सभी जीवधारियों के लिए इस पृथ्वी पर स्वच्छ वायु उपलब्ध कराने एवं पर्यावरण का सन्तुलन बनाये रखने के लिए धरती का तेतीस प्रतिशत भाग वनों से ढका होना चाहिए। एक वृक्ष को पनपने में १०० वर्ष से भी अधिक समय लग जाता है जबकि उसे काटने में मात्र १० मिनट लगते हैं। राष्ट्रीय वन नीति द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार भी पर्वतीय क्षेत्र का ६० प्रतिशत भाग एवं मैदानी क्षेत्रों का कम से कम ३५ प्रतिशत भाग वनाच्छादित होना चाहिए। पर वर्तमान में यह अनुमान क्रमशः ४५ प्रतिशत एवं १६ प्रतिशत तक आकर सिमट गया है एवं बढ़ती औद्योगीकरण की दर से और भी कम होने की सम्भावनायें दीखती है। इस वन विनाश से एवं नये वृक्ष लगाने के प्रति निरुत्साहसे पारिस्थितिकी में जो असन्तुलन उत्पन्न हुआ है, उसने जन स्वास्थ्य व मौसम से लेकर अनेकानेक सामाजिक व आर्थिक समस्यायें उत्पन्न कर दी हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन समस्याओं के समाधान हेतु विगत वर्ष इन्डोनेशिया में यूनेस्को के तत्वावधान में १५० वैज्ञानिकों की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की गई थी। इस समागम में भारत, जापान, आस्ट्रेलिया, नीदरलैण्ड्स, कनाडा, अमेरिका व ब्रिटेन के जाने माने इकालाजिस्ट एवं वन विशेषज्ञों ने भाग लिया। कनाडा के विशेषज्ञ ब्लादीमिर कजीना जो इस सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे, ने अपनी समापन टिप्पणी में चेतावनी देते हुए कहा कि "यदि वृक्ष नहीं रहेंगे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा।" उनके अनुसार "अमेरिका में लू, रशिया में बाढ़, मौसम का अत्यन्त अनियमित हो जाना, जगह-जगह महामारियाँ फैलना एवं असाध्य रोगों में वृद्धि का कारण वन सम्पदा का निर्मम विनाश है। यदि समय रहते चेता न गया तो वही स्थिति होगी जो सहारा रेगिस्तान की हुई है।"

"सहारा कानक्वेस्ट" के लिए प्रसिद्ध वन विज्ञानी लिखते हैं कि—सहारा रेगिस्तान की २० लाख वर्गमील भूमि कभी बहुत ही हरीभरी थी, पर लोगों ने अपनी नासमझी से इसे उजाड़ दिया। तेज गर्म हवाओं व सीधी पड़ने वाली सूर्य की किरणों ने अच्छी खासी उपजाऊ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जमीन को बंजर बना दिया। मात्र यहीं तक होता तो एक बात थी, पर यह विशाल रेगिस्तानी भूखण्ड अब अपनी निकटवर्ती हरीभरी जमीन को भी प्रतिवर्ष ३० वर्गमील की तेज गति से किसी विशाल अजगर की भाँति निगलता चला जा रहा है। प्रतिवर्ष इतनी जमीन सहारा मरुस्थल की चपेट में आकर सदा-सर्वदा के लिए अपनी उपयोगिता खो देती है।

प्राणियों की सबसे बड़ी आवश्यकता है साँस लेने की शुद्ध वायु। इसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पहाड़ों पर जब ऊपर चढ़ते चले जाते हैं तो वातावरण में विद्यमान आक्सीजन की मात्रा शनैः-शनैः कम होती चली जाती है। धीरे-धीरे साँस लेना भी दूभर हो जाता है। पर्वतारोही पीठ पर बँधे आक्सीजन की मदद से अपनी यात्रा पूरी करते हैं। जब रोगी मृत्यु-शैया पर होता है तो अन्तिम समय में एकमात्र अस्त्र के रूप में चिकित्सक प्राणवायु आक्सीजन का ही प्रयोग करते हैं। दमे एवं क्रानिक ब्रोंकाइटिस के रोगी को अपर्याप्त आक्सीजन के कारण जो असह्य पीड़ा होती है, देखी नहीं जा सकती। ऐसे वातावरण में पर्याप्त आक्सीजन न

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होने से जीवधारियों को जो कष्ट हो सकता है उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। डा० रिचार्ड बेकर आंकड़े उद्धृत करते हुए कहते हैं कि घने जंगलों की वायु में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता होती है। इससे बहुत ही कम जल से शरीर की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। शरीर निर्वाह के लिए जरूरी खनिज एवं आवश्यक लवणों की पूर्ति इतने कम जल से ही हो जाती है। यहाँ रहने वाले निवासियों का रक्तचाप १८ मिलीमीटर से ४६ मिलीमीटर तक होता है, फिर भी ये लोग स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहते हैं जबकि न्यूनतम सिस्टोलिक रक्तदाब कम से कम ९० मिलीमीटर होना चाहिए। वृक्षों की प्राणदायिनी शक्ति इस कम रक्तचाप में ही इन वनवासियों की जीवनी शक्ति को सामर्थ्यवान बनाये रखती है। जंगल कटते चले जाने से रोगों के संक्रमण की दर बढ़ती चली जाती है। इनमें श्वाँस एवं त्वचा के रोगों का बाहुल्य होता है। वायु-आर्द्रता में कमी हो जाने से आवश्यक पानी के अभाव में वनवासी 'डिहाईड्रेशन' से ग्रस्त होते देखे गये हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में बच्चों के रोगों में से ८०

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिशत का कारण अशुद्ध जल एवं अस्वास्थ्यकर जलवायु है। १००० में से १२९ बच्चे केवल इसी कारण मृत्यु की गोद में चले जाते हैं। अशुद्ध जल का कारण है अधिकांश गाँवों व कस्बों का नदी के किनारे बसा होना, पीने के लिए मात्र इसी जल का उपलब्ध होना एवं भूरक्षण के कारण इस पानी का अशुद्ध होते चला जाना। पेड़ों के कटने से भूक्षरण तो बढ़ता ही है, जलवायु भी अनियमित होती चली जाती है। 'वृक्ष वातावरण में प्राणवायु बढ़ाते एवं दूषित वायु का परिशोधन करते हैं। औद्योगीकरण जन्य वायु प्रदूषण को रोकने एवं शुद्ध वायु उपलब्ध कराने में इनकी भूमिका सर्वोपरि है। विडम्बना यह है कि इन्हीं नीलकण्ठ विषपायियो को निर्ममता से आर्थिक स्वार्थवश काटा जाता है। यह भी एक जाना-माना तथ्य है कि विगत बीस वर्षों में जैसे-जैसे पेड़ कटते चले गये हैं, जन स्वास्थ्य की गुणवत्ता में काफी कमी आती चली गई है।

मौसम विज्ञानी बताते हैं कि भारत की जलवायु की विशेषता उसके मानसून पर अवलम्बन के कारण नहीं अपितु हिमालय पर आच्छादित वन सम्पदा के कारण है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्षों से ढका हिमालय जल से भरे बादलों को आकर्षित कर वापस मैदानी इलाकों पर बरसने को विवश कर देता है। यदि ये वृक्ष ही न रहेंगे तो बादल नहीं बरसेंगे व मौसम की अनियमितता उत्पन्न होती चली जाएगी। दूसरे वृक्षों के न रहने से भूमि का जो कटाव होता है, उससे नदियों में बाढ़ आने के अवसर बढ़ते चले जाते हैं। नदियों में प्रतिवर्ष बह-बहकर पहाड़ों से जो मिट्टी आती है वह धीरे-धीरे उन्हें छिछला बना देती हैं। ये नदियाँ प्रति-वर्ष वर्षा आते ही अपने तट-बन्ध तोड़कर निर्बन्ध विनाश लीला मचाती हैं एवं करोड़ों रुपये की हानि व जनसंहार करती हैं। गङ्गा नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सभी उत्तर भारत की नदियों का उद्गम स्रोत हिमालय रहा है। २३३६ किलो मीटर लम्बी गङ्गा नदी एवं १४००० किलो मीटर लम्बी इसकी सहायक नदियों (यमुना, रामगङ्गा कोसी, गण्डक, घाघरा, गोमती, सोन) में प्रतिवर्ष बाढ़ आते रहने के कारण एक सर्वेक्षण के अनुसार तीन सौ करोड़ रुपयों की हानि होती है।

पृथ्वी तल से अड़तीस सौ करोड़ टन मिट्टी तथा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रासायनिक लवण बहकर समुद्र में चले जाते हैं। इसी सतही मिट्टी में कृषि सहायक मृदा रसायन एवं असंख्यों जीवाणु होते हैं जिनकी पूर्ति किसी भी कृत्रिम रासायनिक खाद से सम्भव नहीं है। यदि इस हानि को रोक लिया गया होता तो बंजर पड़ी भूमि को उर्वर बनाने के अतिरिक्त इस भूमि से किसी खाद की मदद लिए बिना ही कई गुना अधिक खाद्यान्न उत्पन्न किया जा सकता था। मात्र गङ्गा क्षेत्र में ही लगभग ४ करोड़ पचास लाख एकड़ सेन्टीमीटर मिट्टी का ह्रास प्रतिवर्ष हो रहा है। यह मृदा इतनी है जितनी पूरे उत्तर प्रदेश की कृषि योग्य भूमि (लगभग २ करोड़ ८० लाख हैक्टेयर) २ वर्षों में एक सेन्टीमीटर मृदा समाप्त करके १२ वर्षों में उसे पूर्णतया ऊसर बना देती। इस प्रत्यक्ष हानि को देखते हुए भी जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई अदूरदर्शिता ही दर्शाती है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार खेती योग्य मिट्टी की सतह केवल ८ इन्च अर्थात् २० सेन्टीमीटर होती हैं। इसमें नाइट्रोजन, पोटाश एवं फास्फेट के अतिरिक्त १३ अन्य सूक्ष्म तत्व तथा असंख्यों जीवाणु होते हैं। भूक्षरण से ये नष्ट

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होते हैं एवं सारी जमीन बेकार हो जाती ह । इस प्रकार अब तक पूरे देश में लगभग ४५ करोड़ ५० लाख एकड़ भूमि भूक्षरण से बर्बाद हो चुकी है । एक करोड़ ४५ लाख एकड़ भूमि अम्ल, क्षार तथा जल प्लावित होने के कारण बेकार पड़ी है । ५ करोढ़ एकड़ भूमि की बाढ़ के कारण क्षति मात्र इसीलिए होती है कि पानी का विकास नहीं है ।

संसार के अन्य देशों ने वन विनाश से होने वाली सम्भावित हानि को महत्व दिया है एवं हरितिमा संवर्धन के लिए प्रभावशाली उपाय अपनाये हैं । स्काटलैण्ड के प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी डा० राबर्ट चैम्बर्स के अनुसार "भूमि की उर्वरा शक्ति को घटने से रोकने, पशु-पक्षी सम्पदा को बचाने, बाढ़, सूखा, गर्मी, अकाल, महामारीके रूप में नजर आ रहे विनाश को रोकने के लिए वन सम्पदा का अभिवर्धन सबसे पहले जरूरी बात है । विशेषकर ट्रापिकल देशों को इस दिशा में पहल करनी चाहिए क्योंकि पर्यावरण पर ही वहाँ की आर्थिक स्थिति अवलम्बित है ।" जनचेतना को जगाने का आह्वान करते हुए वे कहते हैं इकालाजी किसी देश विशेष या महाद्वीप से सम्बन्धित नहीं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है वरन् सारे विश्व के नागरिकों को इसमें एकमत होकर सुझावपरक विधेयात्मक चिन्तन व कर्तव्य करना होगा।

जापान का भूक्षेत्र मात्र ३ करोड़ ६१ लाख हैक्टेयर है पर उसकी २ करोड़ ५० लाख हैक्टेयर भूमि पर (७० प्रतिशत) विशाल घने वृक्षों वाले जंगल हैं। उपलब्ध भूभाग पर ही कड़ी मेहनत कर जापानियों ने अपनी प्रति व्यक्ति वार्षिक आय ४४१७० रुपये तक पहुँचा दी है। इस राष्ट्र की कुल जमा पूँजी नौ हजार पाँचसौ चालीस अरब रुपये है जो कि इस देश की समृद्धिका प्रतीक है। पर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने अपने वृक्ष सम्पदा एवं प्राकृतिक संसाधनों से छेड़ाखानी नहीं की है। समृद्धि, स्वास्थ्य एवं अनुशासन के धनी जापानी इसीलिए राष्ट्रीय चरित्र के क्षेत्र में बहुत ऊँचे हैं। इस्राइल के निवासियों ने भी अपने सूखे रेगिस्तानी इलाके को हराभरा बनाने का सङ्कल्प लिया है। वहाँ १० करोड़ पौधे प्रतिवर्ष नये लगाये जाते हैं। जिस प्रकार नन्हें शिशु की देखभाल की जाती है, उसी प्रकार ये भी पौधे लगाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं मान लेते। कुल २०,७०० वर्ग किलोमीटर फैले क्षेत्र में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में इस्राईल में ४० प्रतिशत पर वन हैं। वहाँ की वार्षिक आय प्रति व्यक्ति ३५,२८० रुपये हैं एवं समृद्धि की दृष्टि से यह राष्ट्र किसी भी सुपर पॉवर की तुलना कर सकता है।

तस्मानिया ने भी इसी तरह समय रहते आँखें खोली हैं। वहाँ सतत वृक्षारोपण से १५ हजार एकड़ जमीन को रेगिस्तान के मुँह से निकाल लिया गया है। मध्य आस्ट्रेलिया में बूमेरा रेगिस्तान की कायापलट केवल एक व्यक्ति डेमास्ड फाइलिस ने ही कर डाली है। उस अकेले ने वहाँ ६०,००० वृक्ष ऐसे लगाये हैं जो अब २० फीट से भी अधिक ऊँचे हो गए हैं। इस हरीतिमा ने वहाँ की जलवायु को आमूलचूल बदल डाला है।

चीन के मरुस्थलों एवं निर्जन सूखाग्रस्त इलाकों का वातावरण ऐसा है जहाँ रहने योग्य परिस्थितियाँ नहीं हैं। सिकियाँग प्रान्त के तवलामकाम एवं कुरुबान अनुगुत मरुभूमि तथा भांकोउस जैसे विशाल रेतीले मैदान में खच्चरों की मदद से तथा श्रमदान द्वारा करोड़ों घनमीटर अच्छी मिट्टी पहुँचाकर जंगलों की एक हरीभरी दीवार खड़ी कर दी गई है। इस हरीतिमा के कारण ये स्थान न

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केवल रहने योग्य हो गये हैं, वरन् यहाँ से बहुमूल्य खनिज सम्पदा हस्तगत कर चीन ने अपनी राष्ट्रीय आय में वृद्धि भी की है। अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा हेतु एवं हरियाली वृद्धि के उद्देश्य से चीन ने अपनी विशाल दीवार खड़ी कर दी है जो ६०० मील लम्बी है। इसे अभी कई मील चौड़ा बनाया जा रहा है।

छिटपुट प्रयोग अपने देश में भी कई जगह हुए हैं। बिहार प्रान्त में हजारी किसान का लगाया हजारी बाग सुप्रसिद्ध है। थार के मरुस्थलमें राजस्थान नहर परियोजना के तत्वावधान में इस उजाड़ भूमि को वृक्षों से आच्छादित किया जा रहा है। जब विश्व बैंक व ईरान की मदद से इस योजना को आरम्भ किया गया था, तब किसी को आशा भी नहीं थी कि यह उजाड़ मरुभूमि फिर हरीभरी हो सकती है। रावी, व्यास एवं सतलज नदी के पानी को "हरिके बैरेज" द्वारा इस मरुस्थल में प्रवेशित कर एक बहुत बड़े भूभाग को वृक्षों से ढँक दिया गया है। वहाँ वर्षा कुछ इन्च ही होती थी, अब मोसमविज्ञानी उस क्षेत्र की जलवायु तक बदल जाने की सम्भावनायें व्यक्त करने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगे हैं। ११ लाख ४५ हजार हैक्टेयर किलोमीटर का क्षेत्र इस समय वनारोपण अभियान के अन्तर्गत है।

पूना के पास उर्रीकांचन स्थान पर गांधीजी काफी समय तक रहे। वनवासियों द्वारा आर्थिक लाभ के लिए उजाड़े गए वनों से नंगे हुए पहाड़ों को देखकर वे दुखी मन से कहने लगे "काश ! इन पर्वतों की सुषमा को फिर लौटाया जा सका होता, तो यह रमणीक स्थान ऐसा भयावह न लगता। उनकी व्यथा को उनके प्रिय शिष्य मणिभाई देसाई ने समझा। उन्होंने अकेले ही उस अभियानको आरम्भ किया। बाद में अनेकों सहयोगी मिले। धीरे-धीरे "भारत कृषि उद्योग मण्डल" नामक एक निजी संस्था ने जन्म लिया एवं अब वहाँ घना जंगल है जो प्राकृतिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के लिए जाना जाता है।

वृक्षारोपण एक परम पुण्य है। हरियाली तो मानव जीवनकी सहचरी है। जितना महत्वपूर्ण स्थान सहचरी का सामाजिक जीवन में होता है, उतना ही उसे भी मिलना चाहिए। दो कदम तो अनिवार्य रूपसे उठाना ही चाहिए। एक तो वृक्षारोपण की दिशा में अत्यधिक उत्साह दिखाया

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाय। पर यह उत्साह रोपण तक ही सीमित होकर न रह जाये। पेड़ लगाने के बाद खाद, पानी, निराई से उनकी देखभाल की जाती रहे तो चारों ओर हरियालीका साम्राज्य छा सकता है। दूसरे वृक्षों को सूखने पर या अनिवार्य होने पर ही काटा जाये। इस सम्बन्धमें सामूहिक चेतना जगाई जाए जिससे जनसाधारण हरीतिमा का महत्व समझे। वृक्षों की प्राप्त सम्पदा का दुरुपयोग न हो, इसके लिए भी शासकीय नीति पर नहीं–सामाजिक एवं नैतिक अनुशासन पर ही निर्भर रहना होगा। वृण्य परम्परा हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर है। हरियाली अमावस्या [श्रावण] पर नये वृक्ष लगाने की चिरकालीन परम्परा रही है। इस कार्य को यदि हर गाँव में एक छोटी नर्सरी बनाकर वहाँ से जनोपयोगी, घनी हरीतिमा वाले पौधे वितरित करने के कार्य को जोड़ा जा सके तो चारों ओर हरियाली का साम्राज्य छा सकता है।

समाज सेवा, मानव जाति की सेवा में जो धन की वृद्धि की कमी को बाधक मानते और अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं जो धन और बुद्धि ज्ञान के द्वारा अर्जित

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया जाता है। इसे साधना से मिलने वाले पुण्य फलों के ही समतुल्य मानकर अपनाया जा सकता है। पर्यावरण सन्तुलन में वृक्षारोपण द्वारा सहयोग दे देने का अर्थ होगा प्रकारान्तर से समस्त मनुष्य जाति के लिए सुख और समृद्धि के लिए सुदृढ़ आधार खड़ा कर देना। इस पुनीत कार्य को हर कोई हर परिस्थितियों में रहते हुए कर सकता है।

महाकवि एलेग्जेण्डर ने बड़े भावभरे शब्दों में कहा कि "अपनी स्मृति पीछे छोड़ जाना चाहते हो तो भवन बनाने की अपेक्षा वृक्ष लगाने पर अधिक ध्यान दो। वे चिरस्थायी हैं।

युग निर्माण प्रेस, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखने में वृक्ष वनस्पतियों की असाधारण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति में वृक्षारोपण को देव आराधना जितना महत्व दिया गया है तथा उतना ही पुण्य देने वाला माना गया है। प्रकृति असन्तुलनों की प्रस्तुत विभीषिकाओं को दूर करने के लिए पुनः वृक्षारोपण की पुण्य प्रक्रिया को व्यापक स्तर पर आरम्भ करना होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1980 (23)

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि - मथुरा

Cover Printed by: Laxmi Printing Press, Mathura.